प्रकृति के करीब लाते हैं वर्टिकल गार्डन्स

श्रीनाथ दीक्षित*

वर्टिकल गार्डनिंग आज के आधुनिक युग की नई शैली की एक ऐसी व्यवस्था है, जिससे आप अपनी छोटे-बड़े दीवारों पर आसानी से पौधे और फूल लगवा सकते हैं। दिखने में आकर्षक और मनमोहक लगने वाले ये गार्डन्स घर की रौनक बढ़ाने के साथ-साथ आपको देते हैं एक अच्छी सेहत और बेहतर स्वास्थ्य का खजाना। वर्तमान समय में तेजी से बढ़ते शहरीकरण के चलते लोग प्रकृति से दूर होते जा रहे हैं। ऐसे में शहरों में बढ़ती आबादी के कारण बड़े पैमाने पर होने वाली वृक्षों की कटाई से शुद्ध हवा एवं स्वच्छ वातावरण से मिलने वाले स्वास्थ्य लाभ से हम वंचित हो रहे हैं। ऐसी दशा में वर्टिकल गार्डनिंग ही एक ऐसा महत्त्वपूर्ण उपाय है, जिसके जरिए हम अपने ही घर में एक छोटी-सी व्यवस्था करके अच्छी सेहत के लिए उपयोगी पौधे लगा लेते हैं। ये पौधे हमें एक स्वच्छ वातावरण के साथ-साथ सेहतमंद और स्वस्थ जीवन जीने में मदद करते हैं।

आज वातावरण में बढ़ते प्रदूषण को नियंत्रित करने में वर्टिकल गार्डन्स एक अहम् भूमिका निभा रहे हैं। घर की रौनक बढ़ाने के साथ-साथ इस व्यवस्था में लगाए गए पौधे वातावरण में मौजूद सेहत के लिए हानिकारक कॉर्बन डॉइऑक्साइड जैसे हानिकारक तत्वों को नियंत्रित करके घर में शुद्ध हवा प्रदान करते हैं।

वर्टिकल गार्डनिंग की पहल चीन ने की थी। यहाँ पूरे एशिया का सबसे पहला वर्टिकल गार्डन बनाया गया था। चीन के नॉनजिंग शहर में निर्मित एक इमारत पर बने वर्टिकल गार्डन में लगे पौधे 130 पॉउंड (60 किलोग्राम) ऑक्सीजन पैदा करते हैं। यह गार्डन दो टॉवरों पर बनाया गया है, जिन्हें नॉनजिंग टॉवर्स का नाम दिया गया है। इटली के वास्तुकार, स्टेफनो बोरी द्वारा बनाए गए इन टॉवर्स की ऊंचाई क्रमशः 656 और 354 फुट है। इस अद्भुत वर्टिकल गार्डन को लगभग एक हजार तरह के पौधों और 2,500 तरह की झाड़ियों के इस्तेमाल से तैयार किया गया है।

मध्य लंदन के विक्टोरिया स्टेशन के पास एक "लिविंग दीवार" पर तकरीबन 10,000 से अधिक पौधों को लगाकर उन्हें टैंक में जमा किए गए बारिश के पानी की सहायता से सहेजा गया है।

आज देश में बढ़ते प्रदूषण को मद्देनजर रखते हुए देश की राजधानी, दिल्ली के साथ-साथ अन्य कई शहरों में भी वर्टिकल गार्डनिंग को बढ़ावा दिया जा रहा है। दिल्ली में न सिर्फ सड़कों पर फ्लाईओवरों के नीचे के स्थान ही बल्कि, दिल्ली मेट्रो परिसर के आसपास, सरकार के कई दफ्तरों के बाहर की दीवारों पर भी वर्टिकल गार्डनिंग करवाकर शहर की खूबसूरती बढ़ाने के साथ-साथ लोगों को भी एक अच्छी सेहत देने के इरादे को काफी सराहा भी जा रहा है।

ये वर्टिकल गार्डन्स दिखने में सुन्दर और मनमोहक होने के साथ-साथ सेहत के लिए फायदेमंद होते हैं। इसके अलावा स्थानांतरण में भी उतने ही आरामदायक होते हैं। वैसे देखा जाता है कि घर में या आस-पास बनाए गए गार्डन्स को किसी नई जगह पर दोबारा

*पूर्व कंसल्टेंट, डीकेएमए, कैब-I, पूसा, दिल्ली

वर्टिकल गार्डन और पौधों की सेहत के लिए जरूरी बातें

- घर के बाहर की दीवारों पर कराई गई वर्टिकल गार्डनिंग में लगाए गए पौधों को तेज धूप और प्रदूषण से बचाएँ।
- इंडोर प्लॉन्ट्स को ज्यादा एयर-कंडीशनर वाले कमरे में रखने से बचाएँ, क्योंकि, ऐसे कमरों में पौधे ज्यादा लम्बे समय तक रखने से उनकी नमी सूख जाती है। इस कारण पौधों को सही तरह से बढ़ने में दिक्कत होती है।
- हालांकि, किसी भी पौधे की धूप और पानी की मात्रा की जरूरत उसकी दिशा, स्थान, मौसम और उसके अपने प्रकार पर ही निर्भर करती है। लेकिन, फिर भी जितना हो सके; एक पौधे को कम-से-कम दो दिन में एक बार पानी जरूर दें!
- खाद में सही मात्रा में कीटनाशक का इस्तेमाल जरूरी है। इससे पौधों में लगने वाले विभिन्न प्रकार के कीट और कीटाणुओं का नियंत्रण करने में मदद मिलेगी।
- समय-समय पर खाद को बदलते रहें, इससे पुरानी खाद के कारण पौधों में होने वाले रोगों को रोका जा सकता है।
- खाद और पानी की सही मात्रा का नियंत्रण देगा आपको एक स्वस्थ पौधे की सौगात।
- पौधों की अच्छी सेहत के लिए गमलों में मिट्टी, कोको पीट, इत्यादि, जैसी जरूरी चीजें डालें। इससे पौधों को आवश्यक पोषक तत्व मिल सकेंगे।
- स्टैंड में लगे हुए पौधों के गमलों की लम्बाई का रखें खास ध्यान। पौधों में पानी, खाद, इत्यादि, जैसे जरूरी आदान डालने में और पौधों की देखरेख में आसानी होगी।
- जरूरत पड़ने पर किसी वर्टिकल गार्डनिंग के विशेषज्ञ से जरूर संपर्क करें।
- इन पौधों और फूलों की अच्छी सेहत और स्वास्थ्य के लिए उनकी जरूरत के अनुसार पानी देना चाहिए।

से बनाना और उनका रख-रखाव करना एक बहुत ही चुनौतीपूर्ण कार्य होता है। ऐसे में अगर आप कभी भी अपना घर बदलकर किसी नई जगह पर शिफ्ट हो रहे हैं तो पूरे गार्डन को नए सिरे से दोबारा बनवाना एक बेहद चुनौतीपूर्ण और कठिन काम साबित होगा। लेकिन, पोर्टेबल होने के कारण इन ट्रेन्डी वर्टिकल गार्डन्स को आप अपने नए घर या फ्लैट्स में बड़ी ही आसानी से शिफ्ट कर सकते हैं।

कितना खर्चा

यूं तो, अमूमन एक वर्टिकल गार्डन का खर्चा पूरी तरह से आपकी रचनात्मक सोच, इसके आकार और उसमें करवाई जाने वाली कारीगरी पर निर्भर करता है। वैसे, आमतौर पर ये वर्टिकल गार्डन्स रु. 6 हजार से लेकर रु. 5 लाख तक के खर्च में तैयार हो जाते हैं। इसके साथ ही एक गमला आपको कम-से-कम रु. 250 प्रति वर्ग फीट के हिसाब से मिल जाता है।

वर्टिकल गार्डनिंग का ढांचा

वर्टिकल गार्डन के लिए स्टील के स्टैंडनुमा ढाँचे बाजार में उपलब्ध हैं। ये ढाँचे पूर्णतया घर में जगह के अनुसार अलग-अलग साइज में उपलब्ध हैं। इनके अंदर छोटे-छोटे गमलों को एक कतार में उनके माप और आकार के अनुसार उचित दूरी पर रखा जाता है। इसके अलावा पौधों और फूलों को इन ढाँचों में स्टेपल भी किया जाता है।

इसके बाद पौधों में आवश्यक मिट्टी, खाद, इत्यादि के साथ ही पौधों या फूलों को पानी देने के लिए इस पूरे ढांचे में पाइप का एक पैटर्न बनाया जाता है। इसमें एक ही आकार के छेद होते हैं, जिनके द्वारा सभी पौधों या फूलों को बराबर मात्रा में पानी उपलब्ध करवाया जाता है। इसके लिए पाइप को पानी की एक टंकी के साथ जोड़ दिया जाता है। जैसे ही आप टंकी को खोलते हैं, पाइप के पैटर्न से पानी सभी पौधों और फूलों में बराबर और पर्याप्त मात्रा में पहुँच जाता है।

सिंचाई के तरीके

इन वर्टिकल गार्डन्स में दो तरह से पानी से सिंचाई कर सकते हैं हस्तचालित एवं स्वचालित विधि से सिंचाई।

यहाँ हस्तचालित पानी से सिंचाई का मतलब है। हाथ से चलाया जाने वाला पानी का यंत्र - स्प्रेयर। इस यंत्र की सहायता से अपने हाथ से पौधों और फूलों को पानी दे सकते हैं। लेकिन, कई बार इस यंत्र से पौधों और फूलों को ज्यादा मात्रा में पानी चले जाने से वो खराब भी हो सकते हैं।

वहीं दूसरी ओर स्वचालित सिंचाई यंत्र में ढाँचे के अंदर पाइप के एक पैटर्न को पानी की टंकी के साथ जोड़कर पूरे ढाँचे में लगे पौधे और फूलों को एक साथ बराबर और पर्याप्त मात्रा में पानी पहुँचाया जाता है। इस तरह की व्यवस्था से पौधों और फूलों की अच्छी सेहत और लम्बी आयु सुनिश्चित की जा सकती है।

घर के अंदर वर्टिकल गार्डन में लगाए जाने वाले पौधे

- क्लोरोफॉइटम कोमोसम
- ऐस्पैरागस
- मनी-प्लॉन्ट
- जनैडो
- संगोनियम
- सिंगोनियम
- यूफोर्बिया
- बेगोनिया
- बर्गेनिया
- एस्प्लानियम
- स्नोड्रॉप
- गुलदाउदी
- फर्न
- मॉस
- डहेलिया, इत्यादि।

इंडोर और ऑउटडोर वर्टिकल गार्डन के लिए लाभदायक फूल

- पॉन्जी
- डॉयन्थस
- पेमुला
- वरविना
- ऐलीराम
- कैंडीटफ
- यूफोरबिया फूल
- टेंडेंशिया फूल
- सदाबहार
- ग्लैडिया के फूल, इत्यादि।

(नोट: डा. टी जानकीराम, कुलपति, वाई एस आर हॉर्टिकल्चर यूनीवर्सिटी, आंध्र प्रदेश से बातचीत पर आधारित)